सती होती औरत

सदियों से सुनती हीआ रही
हर बेटी अपनी मां, दादी से
घर औरत से ही चलता है
औरत ही घर की लक्ष्मी है
अल्हड़ मासूम बेटी सोचे है
अरे ! वह बहुत ही खास है
उसकी अलग ही पहचान है
वो समाज का अभिमान है
ससुराल की हद में वही बेटी
क्यों हो जाती खास से आम?
उसके अल्हड़पन के सभी ताने
क्यों उसके ही माँ-बाबा के नाम?
कब जीती है औरत खुद के लिए?
कब सोचती है वो अपनी खातिर?
क्यों कराते एहसास मर्द के ताने?
पचपन की हो, बचपना नहीं गया
बालों से झलकती तार-तार चांदी
माथे पर लिपटी तमाम सिकुड़न
सब को खुश रखने का प्रयास
औरत बन जाती सिर्फ इतिहास

चैताली दीक्षित

ओ!मेघा री.....

ओ! मेघा री.....
फैलाई है तूने क्यूं ये चादर कारी?
क्या तू भीअपने अंतर्मन से हारी?
तू रोए तो तन हल्का
मैं रोऊँ तो मन भारी
ओ! मेघा री.....
उमड़-घुमड़ क्यों करती हो तुम गर्जन
क्या तूने भी समेटा रखा बेबस मन
तुम बरसो तो नूतन सृजन
मैं बरसू तो बंजर नयन
ओ! मेघा री.....
कतरा कतरा कैसे तुमने जोड़ा खुद को
क्या तुझे भी है डर टूट जाने का सपनो को
तुम बिखरो तो हरियाली खुशहाली
मैं बिखरूँ तो अपनो की प्रश्नावली
ओ! मेघा री.....।

नेहू,शिलांग,मेघालय

ISSN:2583-8849